RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
Foundation
missiongyan
कक्षा-12 इतिहास
हिंदी माध्यम
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
ARJUN BATCH
यात्रियों के
नजरिये
Chapter-5 | Part-6

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

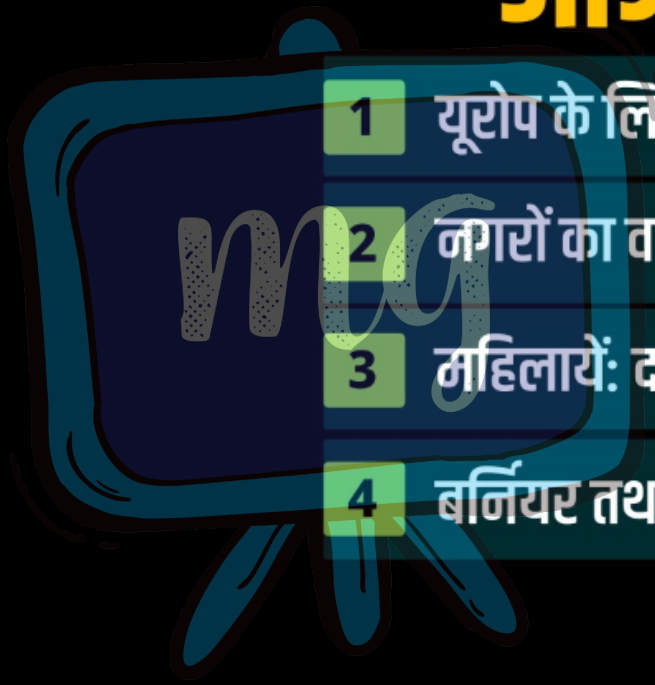

1. यूरोप के लिए एक चेतावनी
2. नगरों का वर्णन
3. महिलायें: दासियाँ, सती तथा श्रमिक
4. बर्नियर तथा सती प्रथा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

यात्रियों के नजरिए

यूरोप के लिए एक चेतावनी

बर्नियर चेतावनी देता है कि यदि यूरोपीय शासकों ने मुग़ल ढाँचे का अनुसरण किया तो :

उनके राज्य इस प्रकार अच्छी तरह से जुते और बसे हुए, इतनी अच्छी तरह से निर्मित, इतने समृद्ध, इतने सुशिष्ट तथा फलते-फूलते नहीं रह जाएँगे जैसा कि हम उन्हें देखते हैं। दूसरी दृष्टि से हमारे शासक अमीर और शक्तिशाली हैं और हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि उनकी और बेहतर और राजसी ढंग से सेवा हो।

यात्रियों के नजरिए

वे जल्द ही रेगिस्तान तथा निर्जन स्थानों के, भिखारियों तथा क्रूर लोगों के राजा बनकर रह जाएँगे जैसे कि वे जिनके विषय में मैंने वर्णन किया है। (मुग़ल शासक) ... हम उन महान शहरों और नगरों को खराब हवा के कारण न रहने योग्य अवस्था में पाएँगे, तथा विनाश की स्थिति में, जिनके जीर्णोद्धार की किसी को चिंता नहीं है, व्यक्त टीले और झाड़ियों अथवा घातक दलदल से भरे हुए खेत, जैसा कि पहले ही बताया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

यात्रियों के नजरिए

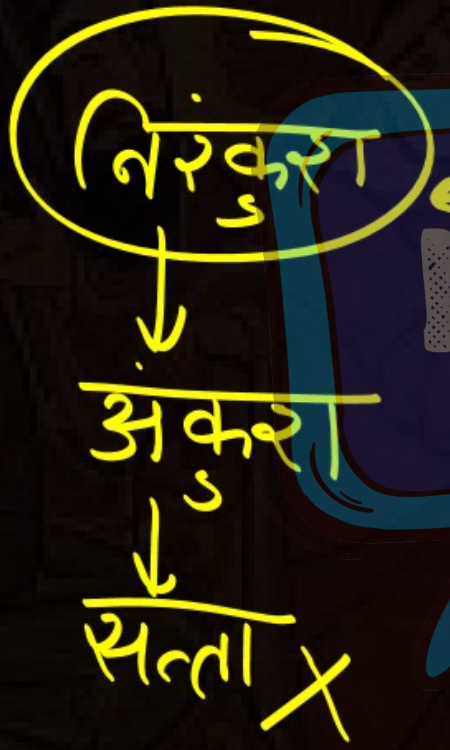

बर्नियर के विचारों का प्रभाव ?

- बर्नियर के विचारों से 18वीं शताब्दी में पश्चिमी विचारक भी प्रभावित हुए।
- फ्रांसीसी दार्शनिक मॉन्टेस्क्यू ने इसके वृत्तान्त का उपयोग "प्राच्य निरंकुशवाद" के सिद्धांत को विकसित करने में किया।
- इस सिद्धांत के अनुसार एशिया में शासक अपनी प्रजा पर निर्बाध प्रभुत्व का उपयोग करते थे।

यात्रियों के नजरिए

- इससे प्रजा गरीबी में तथा दास बनकर रहती थी।
- इसके अनुसार भूमि पर राजा का स्वामित्व होता था।
- निजी सम्पत्ति अस्तित्व में नहीं थी।
- इस दृष्टिकोण से राजा और उसके अमीरों को छोड़कर अन्यों का जीवन यापन बहुत मुश्किल से हो पाता था।

यात्रियों के नजरिए

- 19वीं शताब्दी में कार्ल मार्क्स ने इन्हीं सिद्धांतों को आगे बढ़ाया।
- नाम दिया "एशियाई उत्पादक शैली के सिद्धांत"।
- तर्क दिया कि भारत तथा अन्य एशियाई देशों में उपनिवेशवाद से पूर्व अधिशेष का अधिग्रहण राज्य द्वारा होता था।

यात्रियों के नजरिए

एक अधिक जटिल सामाजिक सच्चाई :-

- बर्नियर के वर्णन में मुगल राज्य को निरंकुश दिखाने का प्रयास किया है।
- उनका विवरण जटिल सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करता है, जैसे –

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

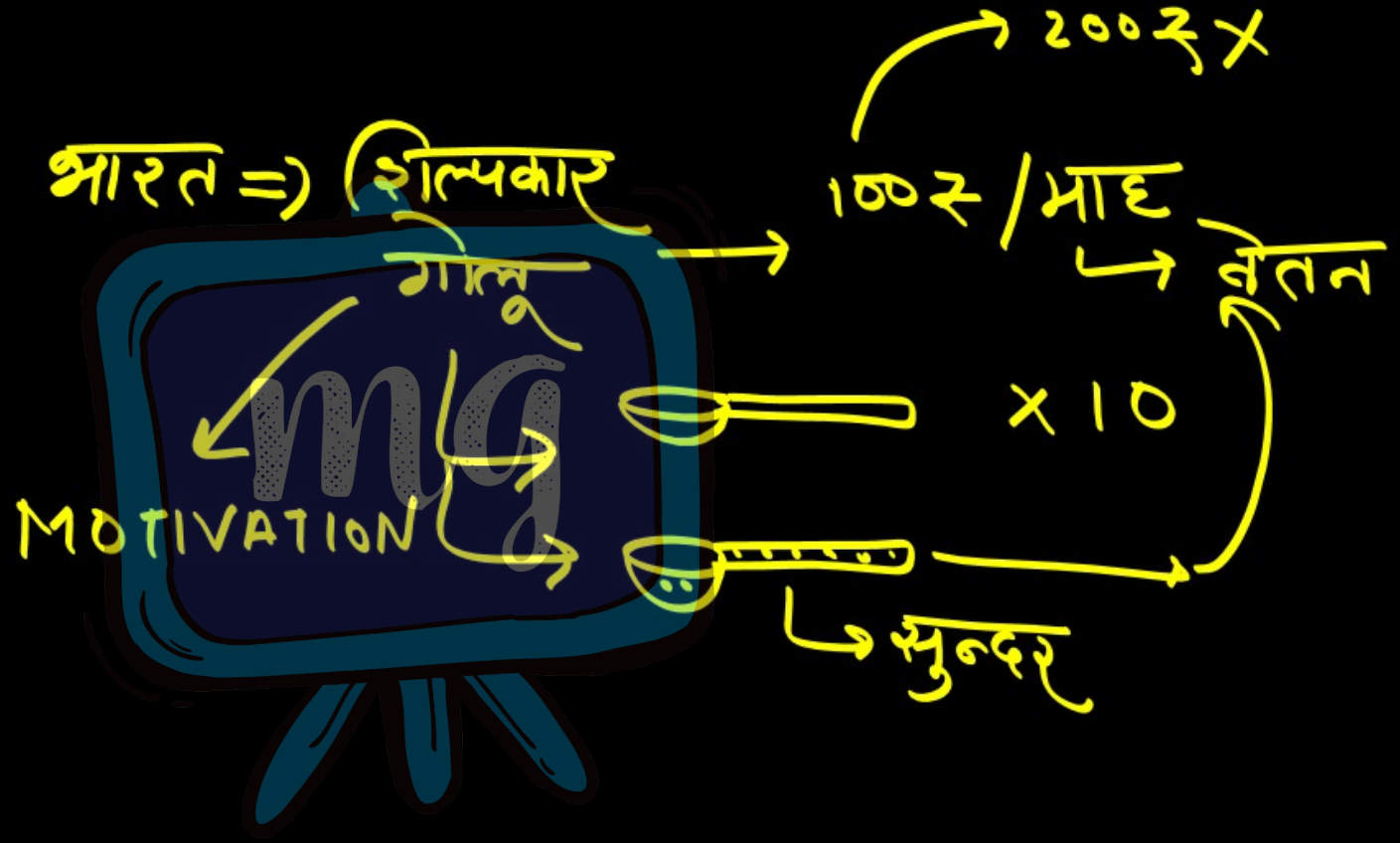

यात्रियों के नजरिए

शिल्पकारों के बारे में वर्णन किया कि :-

- उनके पास अपने उत्पादों को अच्छा बनाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था।
- क्योंकि राज्य लाभ/मुनाफे का अधिग्रहण कर लेता था इसलिए शिल्पकारों से सम्बन्धित उत्पादन पतनोन्मुख था।
- साथ ही वह यह भी मानता है कि पूरे विश्व से बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुएँ भारत में आती थी क्योंकि उत्पादों का सोने-चाँदी के बदले निर्यात होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बर्नियर के अनुसार राज्य मुनाफे/लाभ का अधिग्रहण कैसे करता था?

यात्रियों के नजरिए

व्यापार सम्बन्धित वर्णन में कहा है कि –

- व्यापारिक गतिविधियां सुदूर प्रदेशों तक फैली हुई थी।
- पूरे विश्व से बहुमूल्य धातुएं भारत आती थी।
- उत्पादों का निर्यात सोने-चांदी के बदले होता था।
- व्यापारिक समुदाय समृद्ध था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यात्रियों के नजरिए

नगरों का वर्णन-

- 17वीं शताब्दी में कुल जनसंख्या की लगभग 15 प्रतिशत आबादी नगरों में रहती थी।
- यह अनुपात पश्चिमी यूरोप के नगरीय जनसंख्या के अनुपात से अधिक था।
- फिर भी बर्नियर मुगलकालीन शहरों को "शिविर-नगर" कहता है।

यात्रियों के नजरिए

- ये शिविर नगर अपने अस्तित्व के लिए राजकीय शिविर पर निर्भर रहते थे।
- ये राजकीय दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते थे तथा उनके चले जाने के बाद तेजी से इनका पतन हो जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बर्नियर का डोविर नगर से क्या अभिप्राय था?

Q. इब्नबतूता के विवरण से गांव की कृषि, अर्थव्यवस्था से क्या पता चलता है?

Q. बर्नियर ने युरोपीय शासकों को क्या चेतावनी दी?

Q. ट्रेवल्स इन मुगल एंपायर मे वर्णित भूमि स्वामित्व भारत में किस प्रकार आर्थिक व सामाजिक पतन का कारण था?

महिलाऐं : दासियां, सती तथा श्रमिक :-

- अधिकतर यात्री जिन्होंने यात्रा वृत्तान्त लिखे पुरूष थे।
- जिन्हे महिलाओं की स्थिति का विषय रुचिकर व जिज्ञासा पूर्ण लगता था।
- कभी-कभी वे सामाजिक पक्षपात को सामान्य मान लेते थे, जैसे -
- बाजारों में दास/ दासियाँ किसी भी अन्य वस्तु की तरह खुले आम बेचे जाते थे और नियमित रूप से भेंट स्वरूप भी दिए जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बर्नियर ने अपनी पुस्तक में पूर्व एवं पश्चिम की तुलना किस प्रकार की

- इब्न बतूता ने भी सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक को भेंट देने हेतु घोड़े व दास खरीदे थे।
- इब्न बतूता के अनुसार दासों में काफी विभेद हुआ करता था।
- सुल्तान की सेवा में कार्यरत कुछ दासियां संगीत व गायन में कुशल/दक्ष हुआ करती थी।
- अमीरों पर नजर रखने हेतु सुल्तान दासियों को नियुक्त करता था।

- दासों का उपयोग घरेलू श्रम में भी किया जाता था।
- पालकी या डोले में महिलाओं व पुरूषों को ले जाने का कार्य दास करते थे।
- घरेलू दासों की कीमत बहुत कम होती थी।
- अधिकांश परिवार दास रखने में समर्थ होते थे। कम से कम 1–2 दास रखते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. इब्नबतूता द्वारा दास प्रथा के संदर्भ में दिए गए साक्ष्यों की विवेचना कीजिए?

दासियाँ :-

इब्न बतूता अपने वर्णन में बताते है कि :-

- सम्राट हर छोटे या बड़े अमीर के साथ अपने एक दास को रखता था जो सम्राट के लिए जासूसी का कार्य करते थे।
- वह महिला सफाई कर्मचारियों को भी नियुक्त करता था जो बिना बताये घर में घुस जाती थी। वे दासियों से सूचनाऐं प्राप्त कर लेती थी।
- दासियों को लूट, हमलों व अभियानों के दौरान बलपूर्वक प्राप्त किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर तथा सती प्रथा :-

- सती प्रथा के वर्णन को बर्नियर ने मुख्य रूप से चुना।
- सती प्रथा में कुछ महिलाऐं प्रसन्नता से मृत्यु को चुन लेती थीं तथा अन्य को सती होने के लिए बाध्य किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सती प्रथा के संदर्भ में बर्नियर का क्या दृष्टिकोण था?

सती बालिका :-

बर्नियर के वृत्तान्तों में लाहौर की घटना का वर्णन सबसे मार्मिक है। उसके अनुसार :-

- बर्नियर ने लाहौर में 12 वर्ष की एक सुन्दर अल्प व्यस्क विधवा को सती होते देखा।
- उस भयानक नर्क की ओर जाते समय व असहाय बच्ची जीवित से अधिक मृत प्रतीत हो रही थी।
- वह काँपते हुए बुरी तरह रो रही थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ लोग उसे जबरदस्ती पकड़ कर उस घातक स्थान की ओर ले जाकर लकड़ियों पर बैठा देते है।
- उसके हाथ व पैर बांध दिये ताकि भाग न पाये। इस स्थिति में उस मासूम को जिन्दा जला दिया गया।
- बर्नियर कहता है कि ''मैं अपनी भावनाओं को दबाने में और उनके कोलाहलपूर्ण तथा व्यर्थ के क्रोध से बाहर आने से रोकने में असमर्थ था।''

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

काल रेखा (कुछ यात्री जिन्होंने वृत्तान्त छोड़)	
दसवीं–ग्यारहवीं शताब्दियाँ	
973–1048	मोहम्मद इब्न अहमद अबू रेहान अल बिरूनी (उजबेकिस्तान से)
तेरहवीं शताब्दी	
1254–1323	मार्को पोलो (इटली से)
चौदहवीं शताब्दी	
1304–77	इब्न बतूता (मोरक्को से)
पंद्रहवीं शताब्दी	
1413–82	अब्द अल–रज्जाक कमाल अल–दिन इब्न इस्हाक अल–समरकंदी (समरकंद से)
1466–72 (भारत में बिताए वर्ष)	अफानासी निकितिच निकितन (पंद्रहवीं शताब्दी, रूस से)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

काल रेखा (कुछ यात्री जिन्होंने वृत्तान्त छोड़े)	
सोलहवीं शताब्दी	
1518 (भारत की यात्रा)	दूरते बारबोसा, मृत्यु 1521 (पुर्तगाल से)
1562 (मृत्यु का वर्ष)	सयदी अली रेइस (तुर्की से)
1536–1600	अंतीनियो मानसेरेते (स्पेन से)
सत्रहवीं शताब्दी	
1626–31 (भारत में बिताए वर्ष)	महमूद वली बलखी(बल्ख से)
1600–67	पीटर मुंडी (इंग्लैंड से)
1605–89	ज्यौं बैप्टिस्ट तैवर्नियर (फ्रांस से)
1620–88	फ्रांस्वा बर्नीयर (फ्रांस से)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

स्रोत 14

राजकीय कारखाने

संभवतः बर्नियर एकमात्र ऐसा इतिहासकार है जो राजकीय कारखानों की कार्यप्रणाली का विस्तृत विवरण प्रदान करता है:

कई स्थानों पर बड़े कक्ष दिखाई देते हैं जिन्हें कारखाना अथवा शिल्पकारों की कार्यशाला कहते हैं। एक कक्ष में कसीदाकार एक मास्टर के निरीक्षण में व्यस्तता से कार्यरत रहते हैं। एक अन्य में आप सुनारों को देखते हैं; तीसरे में, चित्रकार; चौथे में, प्रलाक्षा रस का रोगन लगाने वाले; पाँचवें में बढ़ई, खरादी, दर्जी तथा जूते बनाने वाले; छठे में रेशम, जरी तथा महीन मलमल का काम करने वाले...

शिल्पकार अपने कारखानों में हर रोज़ सुबह आते हैं जहाँ वे पूरे दिन कार्यरत रहते हैं; और शाम को अपने-अपने घर चले जाते हैं। इसी निश्चेष्ट नियमित ढंग से उनका समय बीतता जाता है; कोई भी जीवन की उन स्थितियों में सुधार करने का इच्छुक नहीं है जिनमें वह पैदा हुआ था।

➲ बर्नियर इस विचार को किस प्रकार प्रेषित करता है कि हालाँकि हर तरफ़ बहुत सक्रियता है पर उन्नति बहुत कम?

सत्रहवीं शताब्दी में जनसंख्या का लगभग पंद्रह प्रतिशत भाग नगरों में रहता था। यह औसतन उसी समय पश्चिमी यूरोप की नगरीय जनसंख्या के अनुपात से अधिक था। इतने पर भी, बर्नियर मुग़लकालीन शहरों को "शिविर नगर" कहता है, जिससे उसका आशय उन नगरों से था जो अपने अस्तित्व और बने रहने के लिए राजकीय शिविर पर निर्भर थे। उसका विश्वास था कि ये राजकीय दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते थे और इसके कहीं और चले जाने के बाद तेज़ी से पतनोन्मुख हो जाते थे। उसने यह भी सुझाया कि इनकी सामाजिक और आर्थिक नींव व्यवहार्य नहीं होती थी और ये राजकीय प्रश्रय पर आश्रित रहते थे।

भूस्वामित्व के प्रश्न की तरह ही बर्नियर एक अतिसरलीकृत चित्रण प्रस्तुत कर रहा था। वास्तव में सभी प्रकार के नगर अस्तित्व में थे: उत्पादन केंद्र, व्यापारिक नगर, बंदरगाह नगर, धार्मिक केंद्र, तीर्थ स्थान आदि। इनका अस्तित्व समृद्ध व्यापारिक समुदायों तथा व्यावसायिक वर्गों के अस्तित्व का सूचक है।

व्यापारी अक्सर मज़बूत सामुदायिक अथवा बंधुत्व के संबंधों से जुड़े होते थे और अपनी जाति तथा व्यावसायिक संस्थाओं के माध्यम से संगठित रहते थे। पश्चिमी भारत में ऐसे समूहों को महाजन कहा जाता था और उनके मुखिया को सेठ। अहमदाबाद जैसे शहरी केंद्रों में सभी महाजनों का सामूहिक प्रतिनिधित्व व्यापारिक समुदाय के मुखिया द्वारा होता था जिसे नगर सेठ कहा जाता था।

अन्य शहरी समूहों में व्यावसायिक वर्ग जैसे चिकित्सक (हकीम अथवा वैद्य), अध्यापक (पंडित या मुल्ला), अधिवक्ता (वकील), चित्रकार, वास्तुविद, संगीतकार, सुलेखक आदि सम्मिलित थे। जहाँ कई राजकीय प्रश्रय पर आश्रित थे, कई अन्य संरक्षकों या भीड़भाड़ वाले बाज़ार में आम लोगों की सेवा द्वारा जीवनयापन करते थे।

➲ चर्चा कीजिए...

आपके विचार में बर्नियर जैसे विद्वानों ने भारत की यूरोप से तुलना क्यों की?

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

7. महिलाएँ : दासियाँ, सती तथा श्रमिक

जिन यात्रियों ने अपने लिखित वृत्तांत छोड़े वे सामान्यतया पुरुष थे जिन्हें उपमहाद्वीप में महिलाओं की स्थिति का विषय रुचिकर और कभी-कभी जिज्ञासापूर्ण लगता था। कभी-कभी वे सामाजिक पक्षपात को "सामान्य" परिस्थिति मान लेते थे। उदाहरण के लिए, बाज़ारों में दास किसी भी अन्य वस्तु की तरह खुले आम बेचे जाते थे और नियमित रूप से भेंटस्वरूप दिए जाते थे। जब इब्न बतूता सिंध पहुँचा तो उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक के लिए भेंटस्वरूप "घोड़े, ऊँट तथा दास" खरीदे। जब वह मुल्तान पहुँचा तो उसने गवर्नर को "किशमिश के बादाम के साथ एक दास और घोड़ा" भेंट के रूप में दिए। इब्न बतूता बताता है कि मुहम्मद बिन तुग़लक नसीरुद्दीन नामक धर्मोपदेशक के प्रवचन से इतना प्रसन्न हुआ कि उसे "एक लाख टके (मुद्रा) तथा दो सौ दास" दे दिए।

इब्न बतूता के विवरण से प्रतीत होता है कि दासों में काफ़ी विभेद था। सुल्तान की सेवा में कार्यरत कुछ दासियाँ संगीत और गायन में निपुण थीं, और इब्न बतूता सुल्तान की बहन की शादी के अवसर पर उनके प्रदर्शन से खूब आनंदित हुआ। सुल्तान अपने अमीरों पर नज़र रखने के लिए दासियों को भी नियुक्त करता था।

दासों को सामान्यतः घरेलू श्रम के लिए ही इस्तेमाल किया जाता था, और इब्न बतूता ने इनकी सेवाओं को, पालकी या डोले में पुरुषों और महिलाओं को ले जाने में विशेष रूप से अपरिहार्य पाया। दासों की कीमत, विशेष रूप से उन दासियों की, जिनकी आवश्यकता घरेलू श्रम के लिए थी, बहुत कम होती थी और अधिकांश परिवार जो उन्हें रख पाने में समर्थ थे, कम से कम एक या दो को तो रखते ही थे।

सभी समकालीन यूरोपीय यात्रियों तथा लेखकों के लिए, महिलाओं से किया जाने वाला बर्ताव अकसर पश्चिमी तथा पूर्वी समाजों के बीच भिन्नता का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक माना जाता था। इसलिए यह आश्चर्यजनक बात नहीं है कि बर्नियर ने सती प्रथा को विस्तृत विवरण के लिए चुना। उसने लिखा कि हालाँकि कुछ महिलाएँ प्रसन्नता से मृत्यु को गले लगा लेती थीं, अन्य को मरने के लिए बाध्य किया जाता था।

लेकिन महिलाओं का जीवन सती प्रथा के अलावा कई और चीज़ों के चारों ओर घूमता था। उनका श्रम कृषि तथा कृषि के

स्रोत 15

दासियाँ

इब्न बतूता हमें बताता है:

> यह सम्राट की आदत है... हर बड़े या छोटे अमीर के साथ अपने दासों में से एक को रखने की जो उसके अमीरों की मुखबिरी करता है। वह महिला सफाई कर्मचारियों को भी नियुक्त करता है जो बिना बताए घर में दाखिल हो जाती हैं; और दासियों के पास जो भी जानकारी होती है, वे उन्हें दे देती हैं।
>
> अधिकांश दासियों को हमलों और अभियानों के दौरान बलपूर्वक प्राप्त किया जाता था।

स्रोत 16

सती बालिका

यह संभवतः बर्नियर के वृत्तांत के सबसे मार्मिक विवरणों में से एक है:

> लाहौर में मैंने एक बहुत ही सुंदर अल्पवयस्क विधवा जिसकी आयु मेरे विचार में बारह वर्ष से अधिक नहीं थी, की बलि होते हुए देखी। उस भयानक नर्क की ओर जाते हुए वह असहाय छोटी बच्ची जीवित से अधिक मृत प्रतीत हो रही थी; उसके मस्तिष्क की व्यथा का वर्णन नहीं किया जा सकता; वह काँपते हुए चुपचाप रो रही थी; लेकिन तीन या चार ब्राह्मण, एक बूढ़ी औरत, जिसने उसे अपनी आस्तीन के नीचे दबाया हुआ था, की सहायता से उस अनिच्छुक पीड़िता को जबरन मातक स्थल की ओर ले गए, उसे लकड़ियों पर बैठाया, उसके हाथ और पैर बाँध दिए ताकि वह भाग न जाए और इस स्थिति में उस मासूम प्राणी को ज़िन्दा जला दिया गया। मैं अपनी भावनाओं को दबाने में और उनके कोलाहलपूर्ण तथा व्यर्थ के क्रोध को बाहर आने से रोकने में असमर्थ था...

➲ चर्चा कीजिए

आपके विचार में सामान्य महिला श्रमिकों के जीवन ने इब्न बतूता और बर्नियर जैसे यात्रियों का ध्यान अपनी ओर क्यों नहीं खींचा?

अलावा होने वाले उत्पादन, दोनों में महत्त्वपूर्ण था। व्यापारिक परिवारों से आने वाली महिलाएँ व्यापारिक गतिविधियों में हिस्सा लेती थीं, यहाँ तक कि कभी-कभी वाणिज्यिक विवादों को अदालत के सामने भी ले जाती थीं। अत: यह असंभाव्य लगता है कि महिलाओं को उनके घरों के खास स्थानों तक परिसीमित कर रखा जाता था।

आपने देखा होगा कि यात्री वृत्तांत इन शताब्दियों में पुरुषों और महिलाओं के जीवन की एक रोचक झाँकी प्रस्तुत करते हैं। इन वृत्तांतों से हम बहुत सी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, पर इनमें सामाजिक जीवन के कई आयाम अनछुए रह जाते हैं, या फिर एक दृष्टिकोण विशेष से देखे जाते हैं जिन्हें इन वृत्तांतों को पढ़ते हुए ध्यान में रखना आवश्यक है।

साथ ही उपमहाद्वीप के पुरुषों (और संभवत: महिलाओं) के अनुभव और प्रेक्षण अपेक्षाकृत अज्ञात हैं जिन्होंने समुद्रों और पर्वतों को पार किया और उपमहाद्वीप से परे क्षेत्रों में साहसिक यात्राएँ कीं। उन्होंने क्या देखा और सुना? सुदूर क्षेत्रों के लोगों के साथ उनके संबंध किस प्रकार चले। वे किन भाषाओं का प्रयोग करते थे? उम्मीद है कि इन पर और अन्य प्रश्नों पर आने वाले वर्षों में इतिहासकार योजनापूर्ण तरीके से ध्यान केंद्रित करेंगे।

चित्र 5.13
मथुरा से मूर्ति का एक नमूना जिसमें यात्री दर्शाए गए हैं।

➲ यहाँ यातायात के कौन-कौन से साधन अपनाए गए हैं?

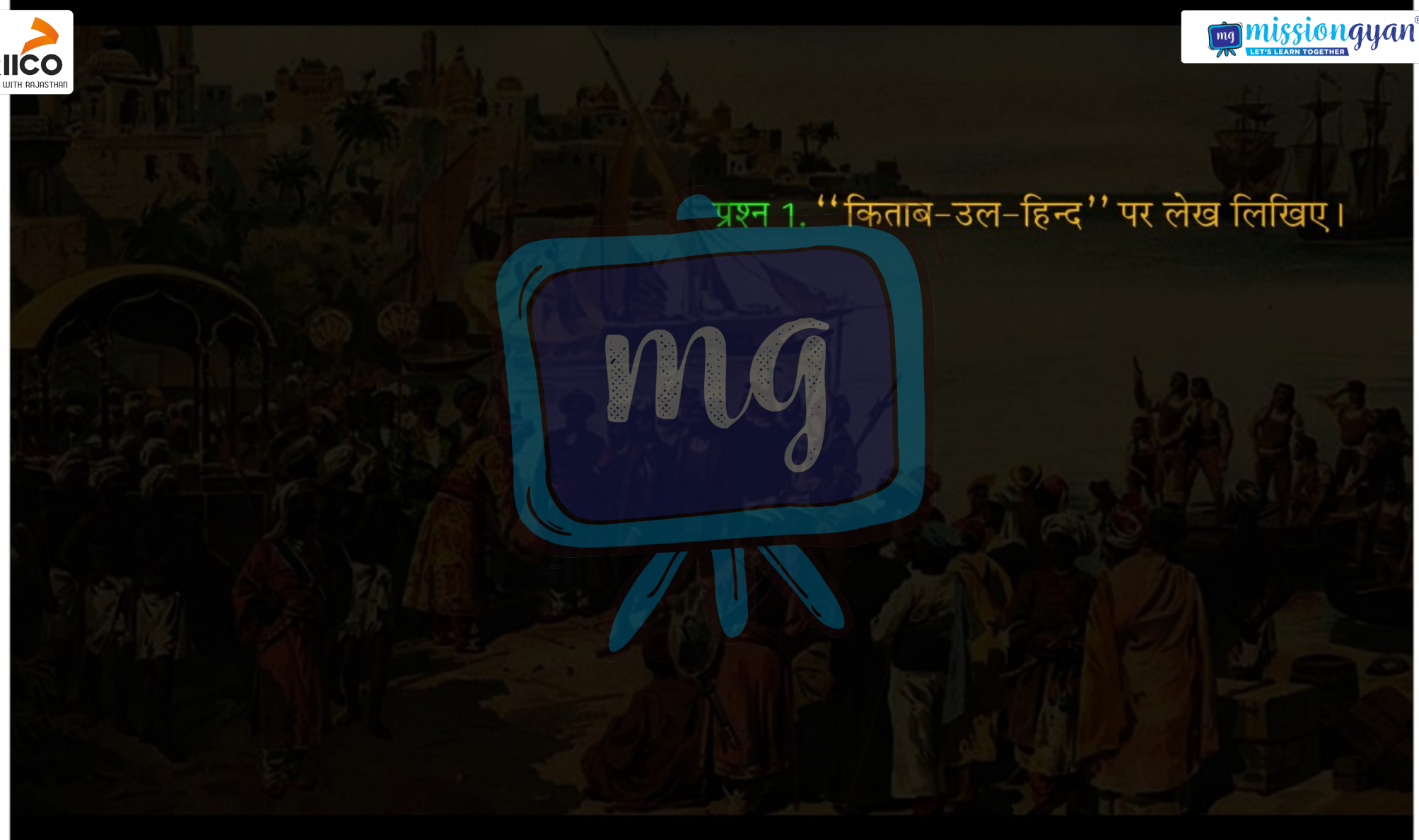

प्रश्न 1. "किताब-उल-हिन्द" पर लेख लिखिए।

उत्तर : ''किताब-उल-हिन्द'' अल-बिरूनी द्वारा अरबी भाषा में लिखित ग्रन्थ हैं। अल-बिरूनी ने इसमें भारत के धर्म, दर्शन, त्यौहार, खगोल विज्ञान, कीमिया, रीति-रिवाज व प्रथाएं भार-तौल, भारतीयों का सामाजिक जीवन, मापन-तंत्र, विज्ञान, मूर्तिकला तथा कानून का विशद् वर्णन किया है।

80 अध्यायों में विभाजित इस ग्रन्थ में एक विशिष्ट लेखन शैली देखने को मिलती है जिसमें लगभग सभी अध्यायों का प्रारम्भ एक प्रश्न से होता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उसके बाद उसका संस्कृतवादी परम्पराओं से वर्णन तथा अंत में अन्य संस्कृतियों से उसकी तुलना। अनेक इतिहासकार इसे ज्यामिति रचना कहते हैं क्योंकि अल-बिरूनी का झुकाव गणित की ओर था।

अल-बिरूनी अनेक भाषाओं से परिचित थे तथा उस समय संस्कृत, पालि एवं प्राकृत भाषाओं में होने वाले अनुवाद की जानकारी उन्हें थी। इस पुस्तक में अनेक प्राचीन दन्तकथाओं के साथ-साथ खगोल विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान से संबंधी जानकारी प्राप्त होती है। यदि संक्षेप में हम कहें तो मध्यकालीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी का यह एक महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

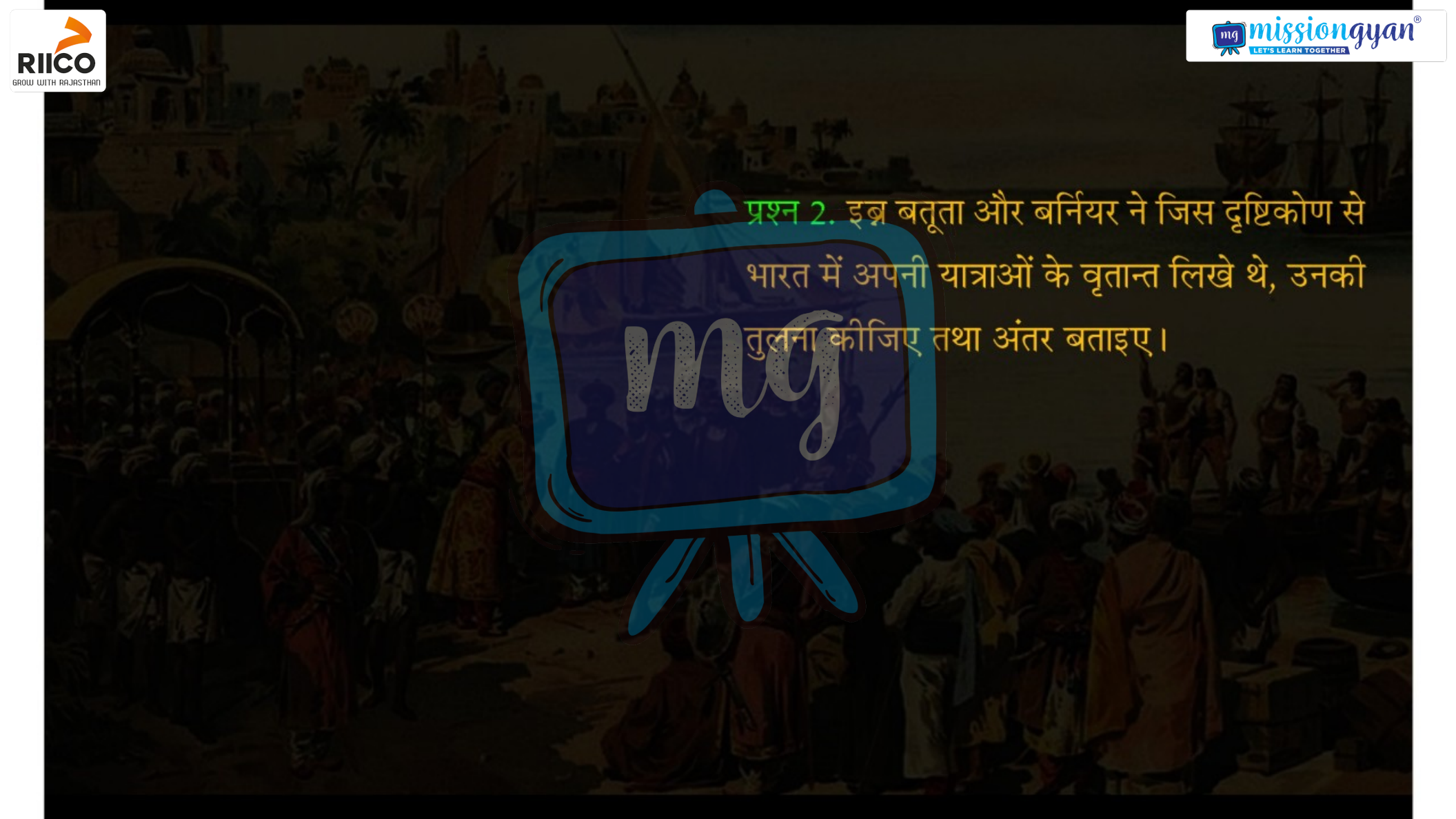

प्रश्न 2. इब्न बतूता और बर्नियर ने जिस दृष्टिकोण से भारत में अपनी यात्राओं के वृतान्त लिखे थे, उनकी तुलना कीजिए तथा अंतर बताइए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : इब्न बतूता व बर्नियर के यात्रा वृतान्तों में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। इब्न बतूता अन्य यात्रियों की तुलना में पुस्तकों के स्थान पर यात्राओं से प्राप्त ज्ञान को अधिक महत्व देता है। वह अपनी पुस्तक ''रिहला'' में नवीन संस्कृतियों लोगों, मान्यताओं तथा आस्थाओं आदि का वर्णन करता है।

उसने भारत की विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन विस्तार से किया है। नारियल व पान जैसे वनस्पतिक उपज का वर्णन किया है जिससे उसके प्रदेशवासी अनजान थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वह भारत को समृद्ध व घनी आबादी वाला शहर मानता था। वह यहाँ शहरी संस्कृति व बाजारों की चहल-पहल से प्रभावित था। यहाँ की डाक व्यवस्था को अत्यधिक कुशल मानता था। इनका लेखन दृष्टिकोण आलोचनात्मक था।

दूसरी ओर बर्नियर ने भारत की कमियों को उजागर करने का प्रयास किया साथ ही भारत में जो भी देखा उसकी तुलना यूरोप विशेषत: फ्रांस में व्याप्त स्थितियों से करता था।

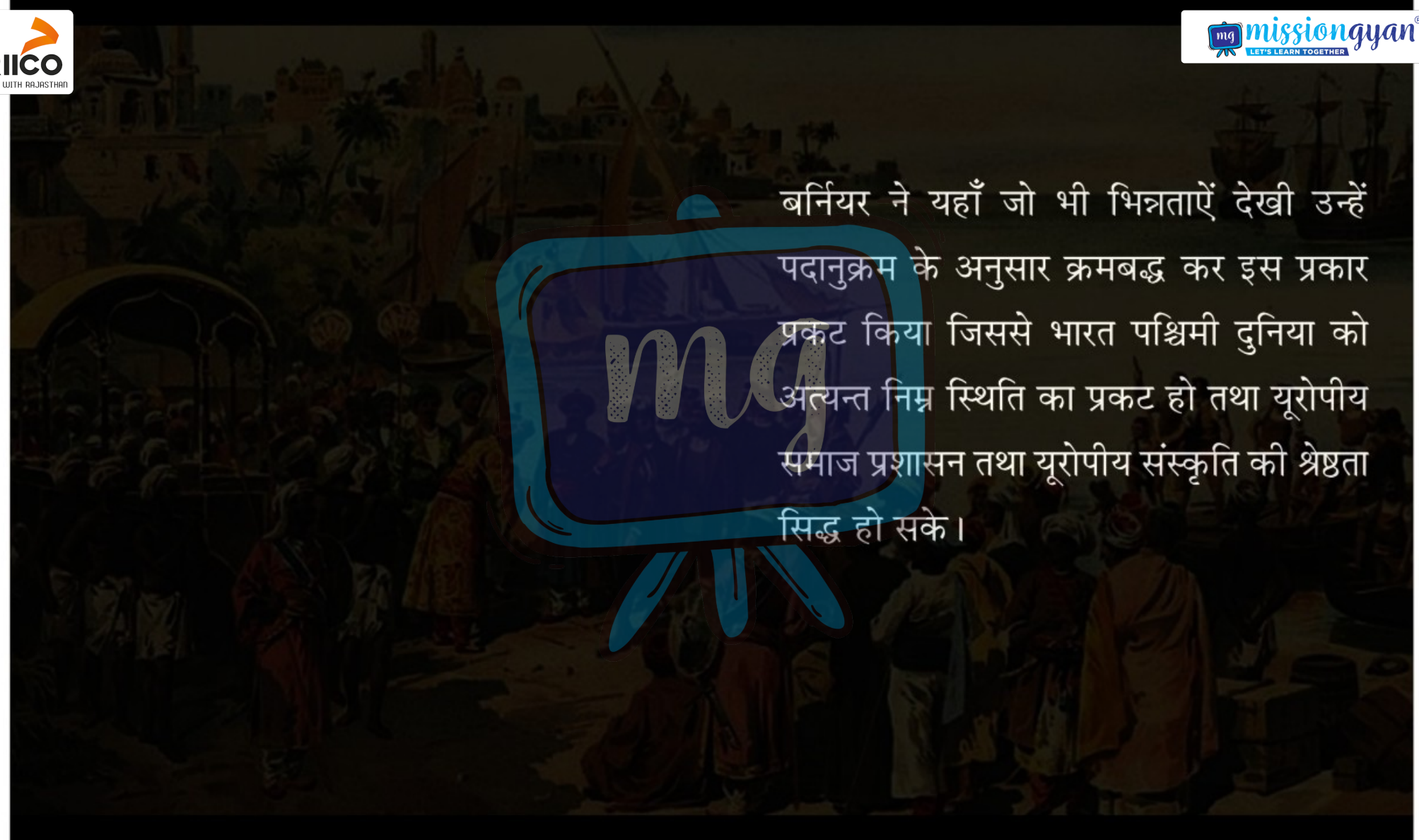

बर्नियर ने यहाँ जो भी भिन्नताऐं देखी उन्हें पदानुक्रम के अनुसार क्रमबद्ध कर इस प्रकार प्रकट किया जिससे भारत पश्चिमी दुनिया को अत्यन्त निम्न स्थिति का प्रकट हो तथा यूरोपीय समाज प्रशासन तथा यूरोपीय संस्कृति की श्रेष्ठता सिद्ध हो सके।

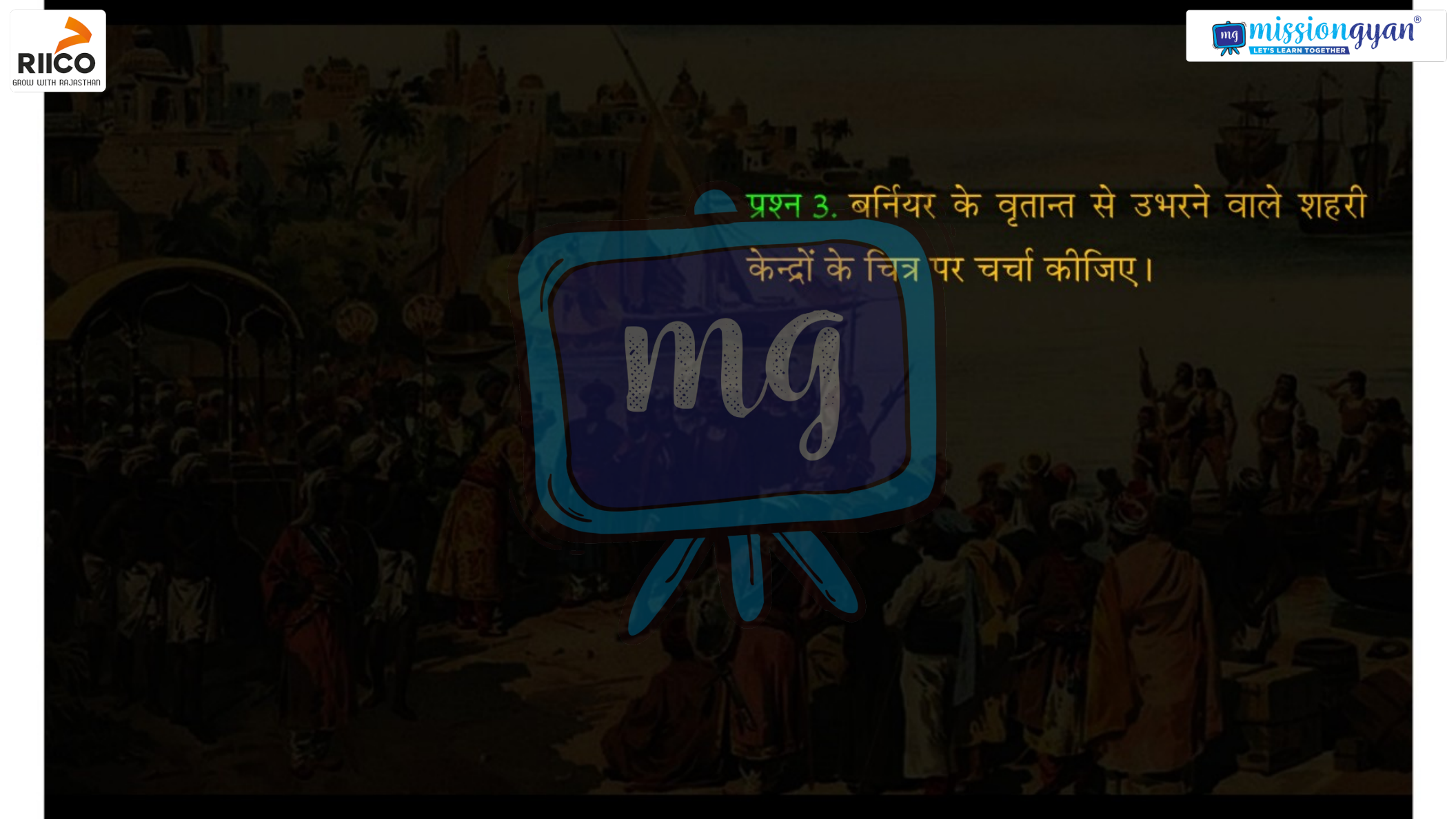

प्रश्न 3. बर्नियर के वृतान्त से उभरने वाले शहरी केन्द्रों के चित्र पर चर्चा कीजिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : (1) फ्रांसीसी यात्री बर्नियर एक भिन्न प्रकार का बुद्धिजीवी था। उसने मुगल नगरों को ''शिविर नगर'' कहा है। जो अपने अस्तित्व हेतु राजकीय आश्रय पर निर्भर थे। ये नगर राजदरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते तथा कहीं ओर जाने पर पतन की ओर अग्रसर हो जाते थे।

(2) उसके अनुसार सभी प्रकार के नगर अस्तित्व में थे जैसे उत्पादन केन्द्र, व्यापारिक नगर, बन्दरगाह नगर, तीर्थ स्थान, धार्मिक नगर आदि।

(3) नगरों में व्यापारियों का संगठन होता था। पश्चिमी भारत में इस प्रकार के समूहों को ''महाजन'' कहा जाता था तथा मुखिया को ''सेठ'' अहमदाबाद जैसे शहरों में सभी महाजनों का सामुहिक प्रतिनिधित्व व्यापारिक समुदाय के नेता द्वारा होता था जिसे ''नगर सेठ'' कहा जाता था।

(4) शहरों में अन्य व्यवसायिक समूह भी होते थे जैसे - हकीम अथवा वैद्य, पंडित या मुल्ला, अधिवक्ता, चित्रकार, संगीतकार, सुलेखक, वास्तुविद आदि। कुछ वर्गों को राज्य आश्रय देता था तथा कुछ सामान्य लोगों की सेवा कर जीवनयापन करते थे।

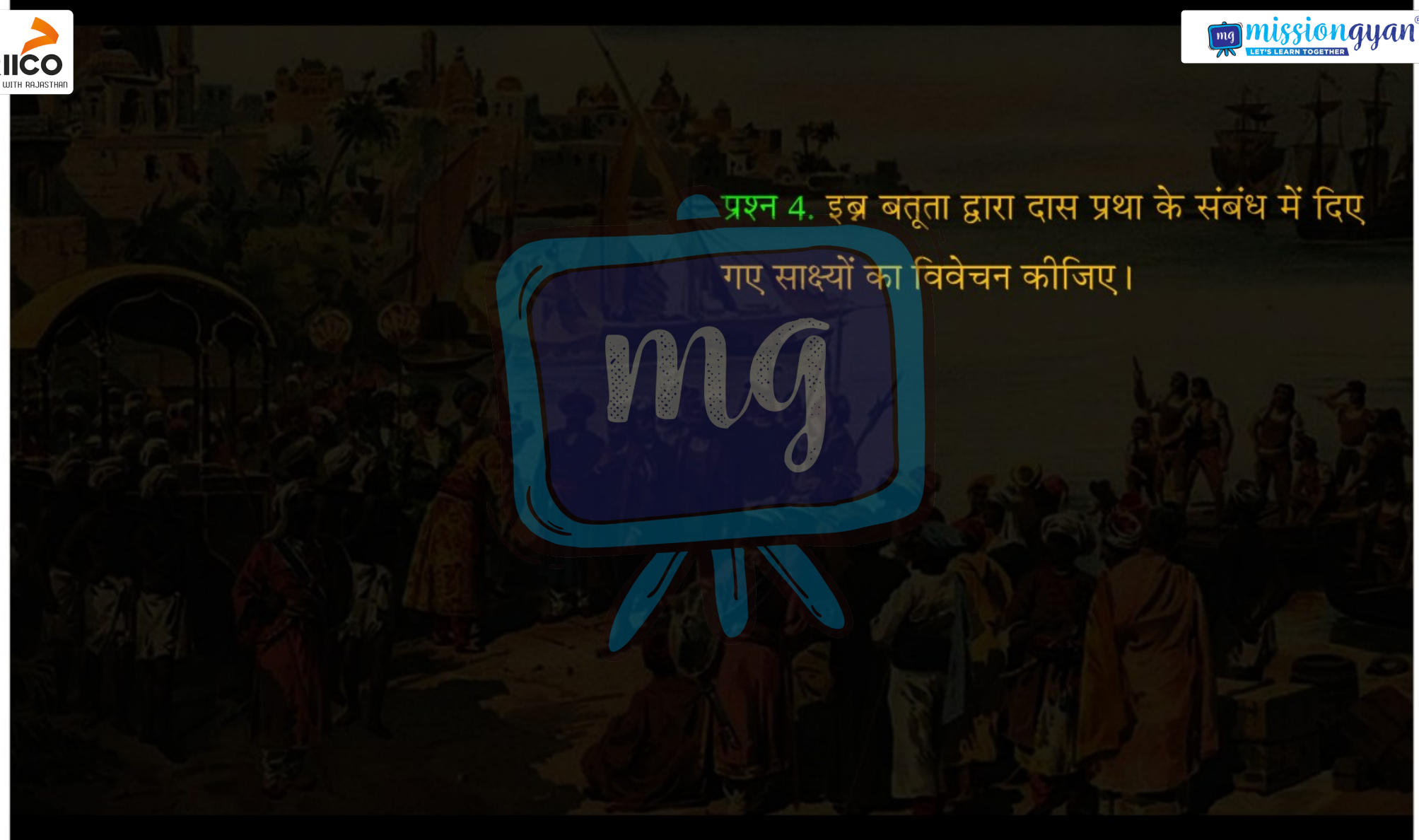
प्रश्न 4. इब्न बतूता द्वारा दास प्रथा के संबंध में दिए
गए साक्ष्यों का विवेचन कीजिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : इब्न बतूता ने दिल्ली सल्तनत काल में दासों का विस्तृत वर्णन किया है। उसके अनुसार फिरोज शाह तुगलक ने दासों के लिए एक अलग विभाग खोला हुआ था। दिल्ली में दासों की बहुत बड़ी संख्या मौजूद थी तथा दासों में अत्यधिक भिन्नता भी थी। इब्न बतूता सुल्तान की बहिन की शादी में दासों के प्रदर्शन से विशेष प्रभावित हुआ था। उसने स्वयं ने सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक को भेंट देने हेतु घोड़े, ऊंट व दास खरीदे थे साथ ही सुल्तान के गवर्नर को भी भेंट में दास दिया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सामान्यत: दासों को घरेलू कार्यों व मेहनत मजदूरी के कार्यों में लगाया जाता था। इसके अतिरिक्त अमीरों को लाने ले जाने वाली डोली व पालकी में भी उन्हें काम में लिया जाता था। अधिकांश परिवारों में दास रखने की परम्परा थी। दासों विशेषरूप से उन दासों का मूल्य बहुत कम होता था जिन्हें घरेलू श्रम में काम में लिया जाता था। विशेष योग्यता वाले दासों का विशेष महत्व व मूल्य हुआ करता था।

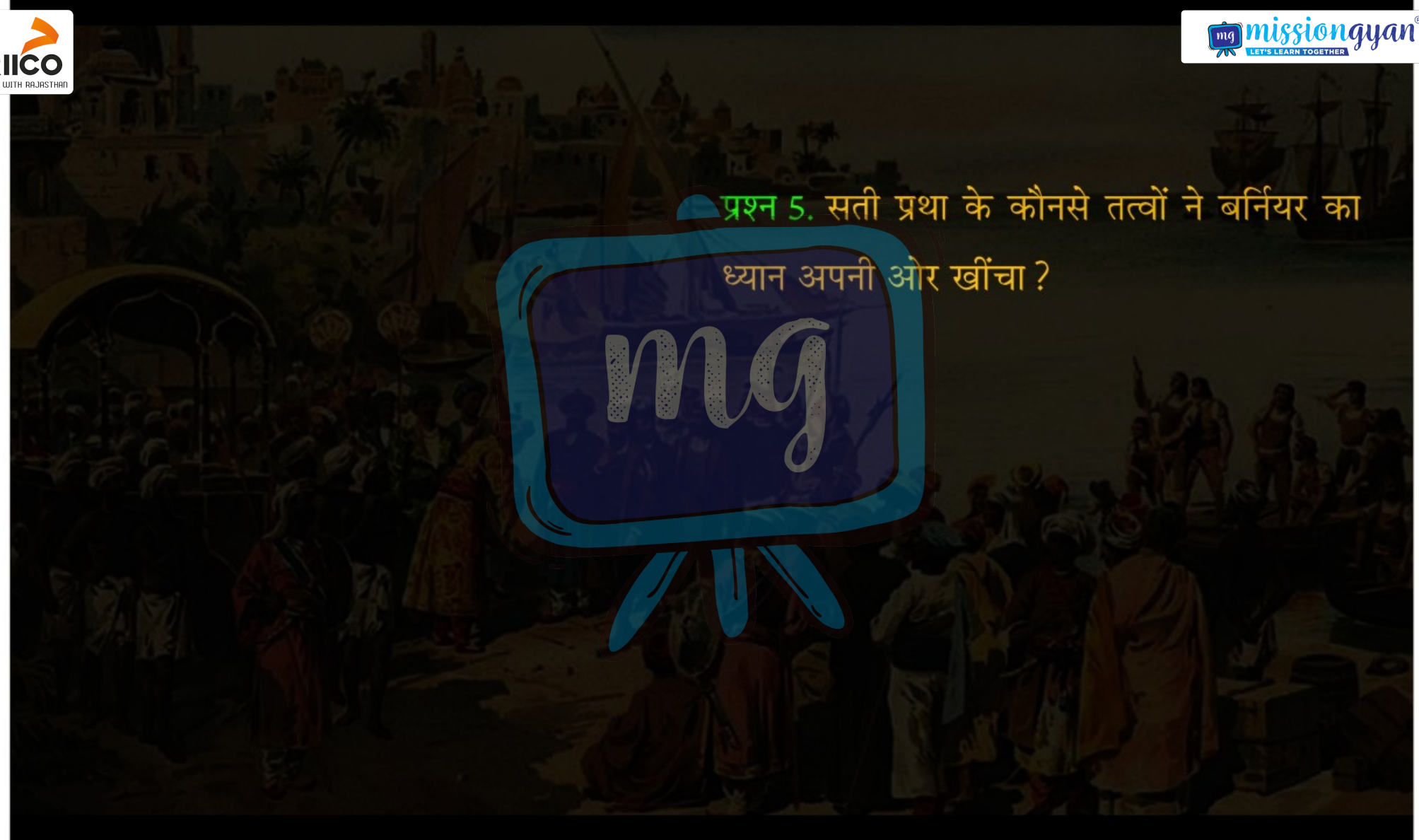
प्रश्न 5. सती प्रथा के कौनसे तत्वों ने बर्नियर का ध्यान अपनी ओर खींचा ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : बर्नियर ने सती प्रथा के संबंध में विस्तृत वर्णन लिखा है। उसने लाहौर में स्वयं एक अल्पव्यस्क कन्या को सती होते हुए देखा था।

1. सती प्रथा भारत में व्यापक रूप से अस्तित्व में थी।
2. यह एक अमानवीय प्रथा थी जिसमें पति के निधन हो जाने पर उसकी विधवा स्त्री को अग्नि के भेंट चढ़ा दिया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. अधिकांश विधवाओं जिनमें बहुत कम आयु की बच्चियां भी होती थीं, उनहें जीवित जलने के लिए बाध्य किया जाता था।

4. सती होने की प्रक्रिया में ब्राह्मण व घर परिवार की बड़ी महिलाऐं भी शामिल होती थीं।

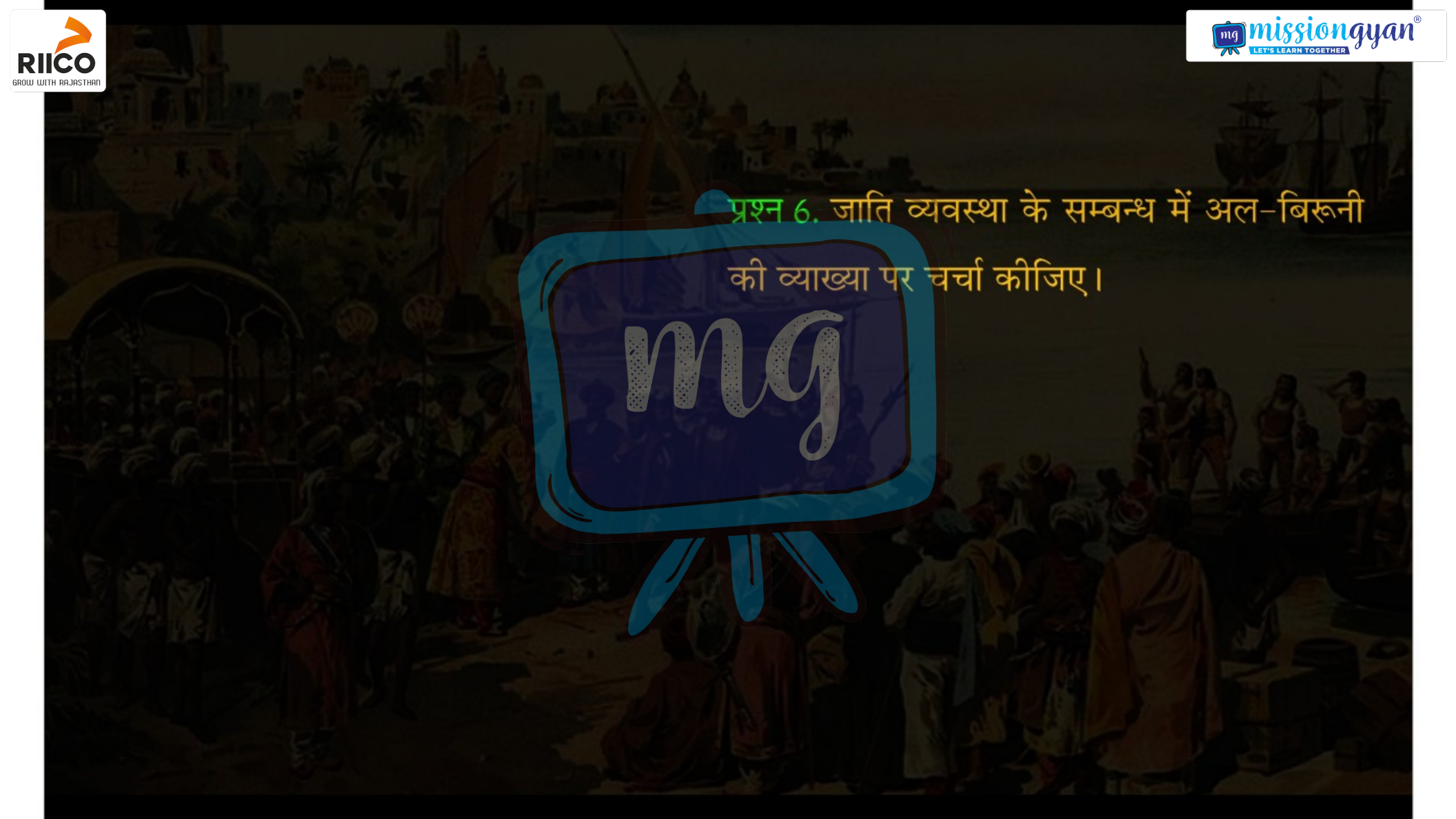

प्रश्न 6. जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में अल-बिरूनी की व्याख्या पर चर्चा कीजिए।

उत्तर : अल-बिरूनी ने अपनी पुस्तक ''किताब-उल-हिन्द'' में भारतीय समाज मे प्रचलित जाति-व्यवस्था का विशुद्ध वर्णन किया है। उनकी व्याख्या निम्नानुसार है -

1. सामाजिक वर्गों का विवरण :- अल-बिरूनी ने अपनी पुस्तक में भारतीय जाति-व्यवस्था के सम्बन्ध में उसे अन्य समाजों तथा समुदायों के प्रतिरूपों के माध्यम से समझने तथा उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है।

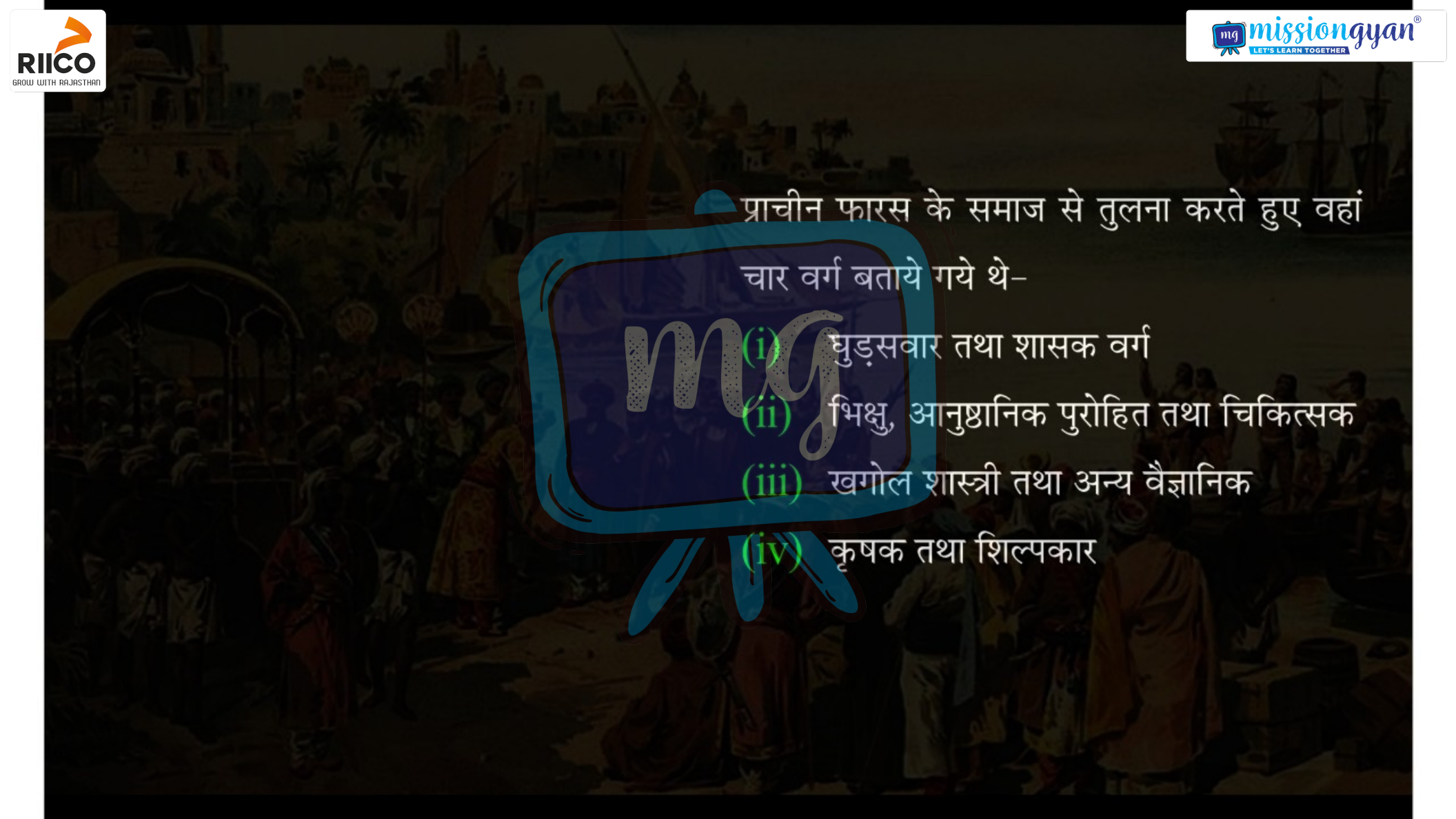

प्राचीन फारस के समाज से तुलना करते हुए वहां चार वर्ग बताये गये थे-

(i) घुड़सवार तथा शासक वर्ग

(ii) भिक्षु, आनुष्ठानिक पुरोहित तथा चिकित्सक

(iii) खगोल शास्त्री तथा अन्य वैज्ञानिक

(iv) कृषक तथा शिल्पकार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. **"अपवित्रता" पर विचार :-** अल-बिरूनी जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को मानता था, परन्तु वह अपवित्रता की धारणा को अस्वीकार करता है। उसके अनुसार "प्रत्येक वह वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है।" उदाहरण के लिए सूर्य वायु को स्वच्छ करता है और समुद्र में नमक पानी को गन्दा होने से बचाता है। अल-बिरूनी इस बात पर जोर देता है कि यदि ऐसा नहीं हो, तो पृथ्वी पर जीवन असंभव हो जाता।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उसके अनुसार जाति व्यवस्था में अपवित्रता की धारणा प्रकृति के नियमों के विरूद्ध थी।

3. **भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था :-** अल-बिरूनी ने भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था का उल्लेख निम्नानुसार किया है।

(i) **ब्राह्मण या पुरोहित :-** उसके अनुसार ब्राह्मणों को वर्ण व्यवस्था में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार इनकी उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के मुख से मानी गयी है।

(ii) क्षत्रिय :- क्षत्रियों की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के कन्धे व भुजाओं से मानी गयी है। सामाजिक दृष्टि से इन्हें द्वितीय स्थान दिया गया है।

(iii) वैश्य :- क्षत्रियों के बाद वैश्यों का स्थान आता है। इनकी उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा की जंघाओं से हुई मानी जाती है तथा वर्ण व्यवस्था में इन्हें तृतीय स्थान दिया गया।

(iv) शुद्र :- शुद्रों का जन्म आदि देव ब्रह्मा के चरणों से माना जाता है। चरणों का शरीर में अंतिम स्थान होने के कारण समाज में अंतिम अर्थात् चतुर्थ स्थान दिया गया तथा तीनों वर्णों की सेवा करना इनका कर्त्तव्य माना गया।

इन सभी वर्गों में भिन्नता होने के बाद भी ये शहरों व गाँवों में मिल-जुल कर रहा करते थे।

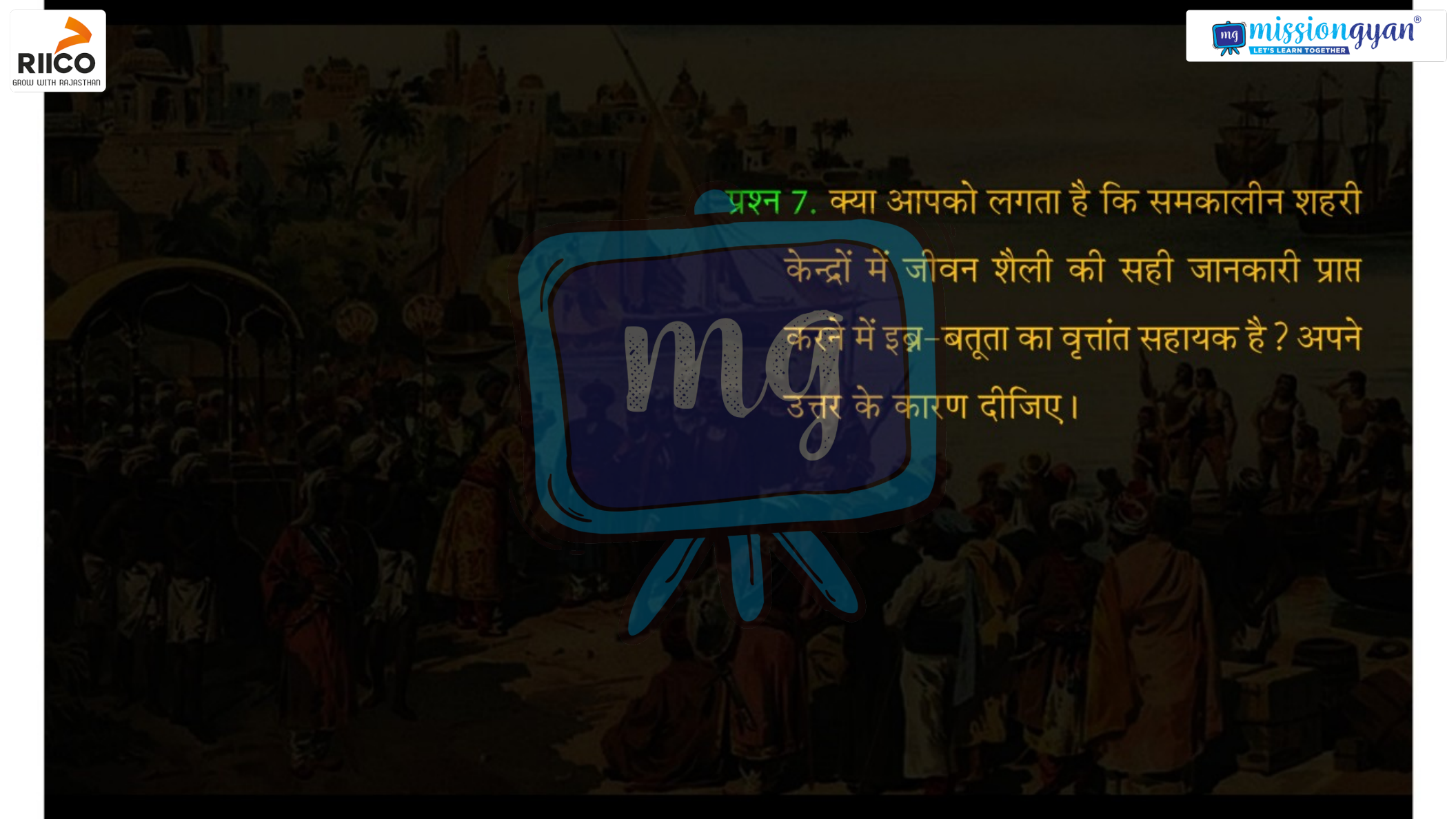

प्रश्न 7. क्या आपको लगता है कि समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली की सही जानकारी प्राप्त करने में इब्न-बतूता का वृत्तांत सहायक है ? अपने उत्तर के कारण दीजिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : इब्न-बतूता ने अपने यात्रा वृत्तान्त ''रिहला'' में समकालीन शहरी केन्द्रों की जीवन शैली का विस्तृत वर्णन किया है। हाँ, हमें लगता है कि समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली की सही-सही जानकारी प्राप्त करने में इब्न-बतूता का वृत्तान्त काफी सहायक है। ऐसा लगता है कि जैसे सजीव चित्र हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया गया हो। उसकी जानकारी का मुख्य आधार उसके द्वारा किया गया सूक्ष्म अध्ययन एवं अवलोकन था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इब्न बतूता के वृत्तान्त से समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली के बारे में निम्न जानकारियां प्राप्त होती हैं :-

1. व्यापक अवसरों से परिपूर्ण घनी आबादी वाले शहर:- इब्न बतूता के अनुसार तत्कालीन नगर घनी आबादी वाले व समृद्ध थे। भारतीय उपमहाद्वीप के नगरों में इच्छा शक्ति, साधनों व कौशल वालों के लिए कार्य के भरपूर अवसर थे। कभी-कभी युद्धों तथा अभियानों के कारण नगरों को नुकसान भी होता था।

2. चमक-दमक वाले बाजार व भीड़-भाड़ वाली सड़कें :- अधिकांश शहरों में चमक-दमक वाले बाजार थे तथा विविध प्रकार की सामग्री से भरे हुए थे। अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. **बड़े-बड़े शहर :-** इब्न बतूता के अनुसार दिल्ली एक बहुत बड़ा शहर था, जिसकी आबादी बहुत अधिक थी। दौलताबाद भी कम नहीं था। वह आकार में दिल्ली को चुनौती देता था।

4. **बाजारों का सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र होना :-** बाजार केवल क्रय-विक्रय के स्थान ही नहीं थे, बल्कि ये सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र भी थे। अधिकांश बाजारों में एक मंदिर व मस्जिद होती थी। कुछ बाजारों में नर्तकी, संगीतकारों व गायकों के प्रदर्शन हेतु सार्वजनिक स्थान भी उपलब्ध था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

5. इतिहासकारों द्वारा इब्न-बतूता के वृत्तान्त का प्रयोग :- इतिहासकारों ने इब्न बतूता के वृत्तान्त का प्रयोग नगरों की समृद्धि का वर्णन करने में किया है। इतिहासकार यह तर्क देते हैं कि नगरों की समृद्धि व सम्पत्ति का एक बड़ा भाग गाँवों के अधिशेष के अधिग्रहण से प्राप्त होता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

6. भारतीय उपमहाद्वीप का व्यापार व वाणिज्य के अन्तर एशियाई तन्त्रों से जुड़ा होना :- इब्न बतूता के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप व्यापार व वाणिज्य के एशियाई तंत्रों से भली भाँति जुड़ा हुआ था। भारतीय माल की मध्य तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में बहुत अधिक माँग थी जिससे व्यापारियों व शिल्पकारों को बहुत अधिक आर्थिक लाभ होता था।

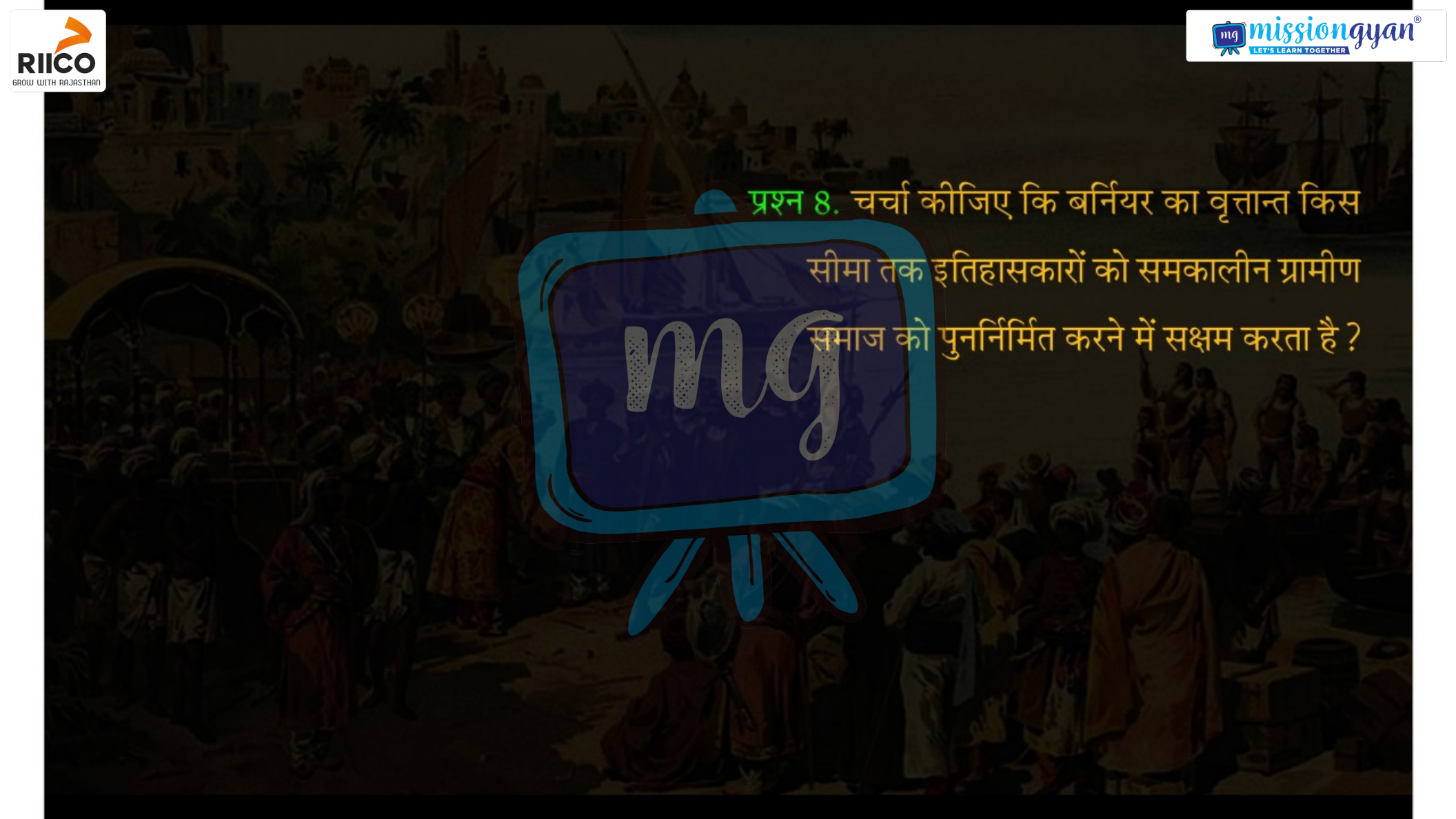

प्रश्न 8. चर्चा कीजिए कि बर्नियर का वृत्तान्त किस सीमा तक इतिहासकारों को समकालीन ग्रामीण समाज को पुनर्निर्मित करने में सक्षम करता है ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : फ्रांस्वा बर्नियर ने समकालीन ग्रामीण समाज का जो वृत्तान्त लिखा है वह सर्वथा सत्य नहीं है उसके अनुसार भारत तथा यूरोप के मध्य मूल असमानताओं में से एक भारत में निजी भू-स्वामित्व का सर्वदा अभाव था। बर्नियर का निजी भू-स्वामित्व में अत्यधिक विश्वास था तथा उसने भूमि पर राजकीय स्वामित्व को राज्य तथा उसके निवासियों, दोनों के लिए हानिकारक बताया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर का वृत्तान्त इतिहासकारों को समकालीन ग्रामीण समाज को पुनर्निर्मित करने में आंशिक रूप से ही सक्षम करता है, पूर्णरूप से नहीं। बर्नियर ने तत्कालीन ग्रामीण समाज का जो वृत्तान्त प्रस्तुत किया है, निम्न बिन्दुओं के द्वारा उसका वर्णन किया जा रहा है :-

1. **भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव :-** बर्नियर के अनुसार भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव था। उसके अनुसार संपूर्ण भूमि का स्वामी मुगल सम्राट को माना जाता था। सम्राट इस भूमि को अपने अमीरों में बांट देता था। इस व्यवस्था से समाज व अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. **भू-धारकों पर प्रतिकूल प्रभाव :-** बर्नियर के अनुसार भूमि पर राजकीय स्वामित्व के कारण भूधारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे। निजी भू-स्वामित्व के अभाव में बेहतर भूधारकों के वर्ग का उदय नहीं हो पाया, जो भूमि के सुधार व अच्छे रख-रखाव का प्रयास करता। इस कारण कृषि का विनाश, किसानों का उत्पीड़न और समाज के सभी वर्गों के स्तर में पतन हुआ। केवल शासक वर्ग ही ऐसा था जिस पर इस व्यवस्था का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. भारतीय समाज को दरिद्र लोगों का जनसमूह मानना :-

बर्नियर भारतीय समाज के लोगों को दरिद्र लोगों का जनसमूह मानता था। यह समाज अमीरों व शक्तिशाली शासक वर्ग के अधीन था। उसके अनुसार ''भारत में मध्य की स्थिति के लोग नहीं हैं।'' अर्थात या तो अमीर लोग है या दरिद्र लोग।

4. भूमि पर राज्य के स्वामित्व के साक्ष्य का अभाव:- बर्नियर के वर्णन में सम्पूर्ण भूमि का स्वामी राज्य या शासक को माना है परन्तु किसी भी सरकारी मुगल दस्तावेजों में ऐसा एक भी साक्ष्य नहीं मिला कि राज्य ही सम्पूर्ण भूमि का एक मात्र स्वामी था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

5. **ग्रामीण समाज का वर्णन वास्तविकता से दूर :–** वास्तव में बर्नियर का ग्रामीण समाज का वर्णन सच्चाई से बहुत दूर है। सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दी के ग्रामीण समाज में चारित्रिक रूप से बड़े पैमाने पर सामाजिक व आर्थिक अंतर था। एक ओर बड़े जमींदार लोग थे अन्यों में ''अस्पृश्य'' भूमिहीन श्रमिक (बलाहार) थे। इन दोनों के मध्य किसान इसके अलावा छोटे किसान भी थे जो बहुत मुश्किल से अपना जीवन यापन कर पाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 9. यह बर्नियर के वृत्तान्त से लिया गया एक उदाहरण है :-

ऐसे लोगों द्वारा तैयार सुन्दर शिल्पकारी के बहुत उदाहरण है, जिनके पास औजारों का अभाव है और जिनके विषय में यह भी नहीं कहा जा सकता है कि उन्होंने किसी निपुण कारीगर से कार्य सीखा है। कभी-कभी वे यूरोप में तैयार वस्तुओं की इतनी निपुणता से नकल करते हैं कि असली और नकली के बीच अन्तर कर पाना मुश्किल हो जाता

है। अन्य वस्तुओं में, भारतीय लोग बेहतरीन बंदूक और ऐसे सुन्दर स्वर्णाभूषण बनाते हैं कि संदेह होता है कि कोई यूरोपीय स्वर्णकार कारीगरी के इन उत्कृष्ट नमूनों से बेहतर बना सकता है। मैं अक्सर इनके चित्रों की सुन्दरता, मृदुलता तथा सूक्ष्मता से आकर्षित हुआ हूँ।

उनके द्वारा (बर्नियर) अलिखित शिल्प कार्यों को सूचीबद्ध कीजिए तथा इनकी तुलना अध्याय में वर्णित गतिविधियों से कीजिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : बर्नियर ने इस उदाहरण में सुन्दर स्वर्ण आभूषण निर्माण व बन्दूकें बनाने आदि शिल्प कला का उल्लेख किया है। उसके अनुसार भारतीय स्वर्णकार ऐसे सुन्दर सोने के आभूषण बनाते हैं कि संदेह होता है कि कोई यूरोपीय स्वर्णकार कारीगरी के इन उत्कृष्ट नमूनों से अच्छा बना सकता है।

राजकीय कारखानों का उल्लेख करते हुए उनमें होने वाले विविध शिल्प गतिविधियों का उल्लेख किया है। शिल्पकार प्रतिदिन सुबह कारखानों में आते थे तथा दिनभर अपना कार्य कर शाम को अपने-अपने घर चले जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर द्वारा अलिखित शिल्पकार्य तथा इनका तुलनात्मक विवरण :-

(1) जरी का कार्य

(2) कालीन अथवा गलीचे का कार्य

(3) कढ़ाई का कार्य

(4) कसीदाकारी का कार्य

(5) स्वर्ण आभूषण का कार्य

(6) सोने-चाँदी के वस्त्रों का कार्य

(7) चित्रकारी

(8) बढ़ईगिरी

(9) खरादी

(10) कपड़े सीना

(11) जूते बनाना

(12) रेशम, बारीक मलमल के वस्त्र निर्माण

बर्नियर के अलावा इब्न बतूता जो मोरक्को से भारत आया था, ने भी भारतीय वस्तुओं की अत्यधिक प्रशंसा की है।

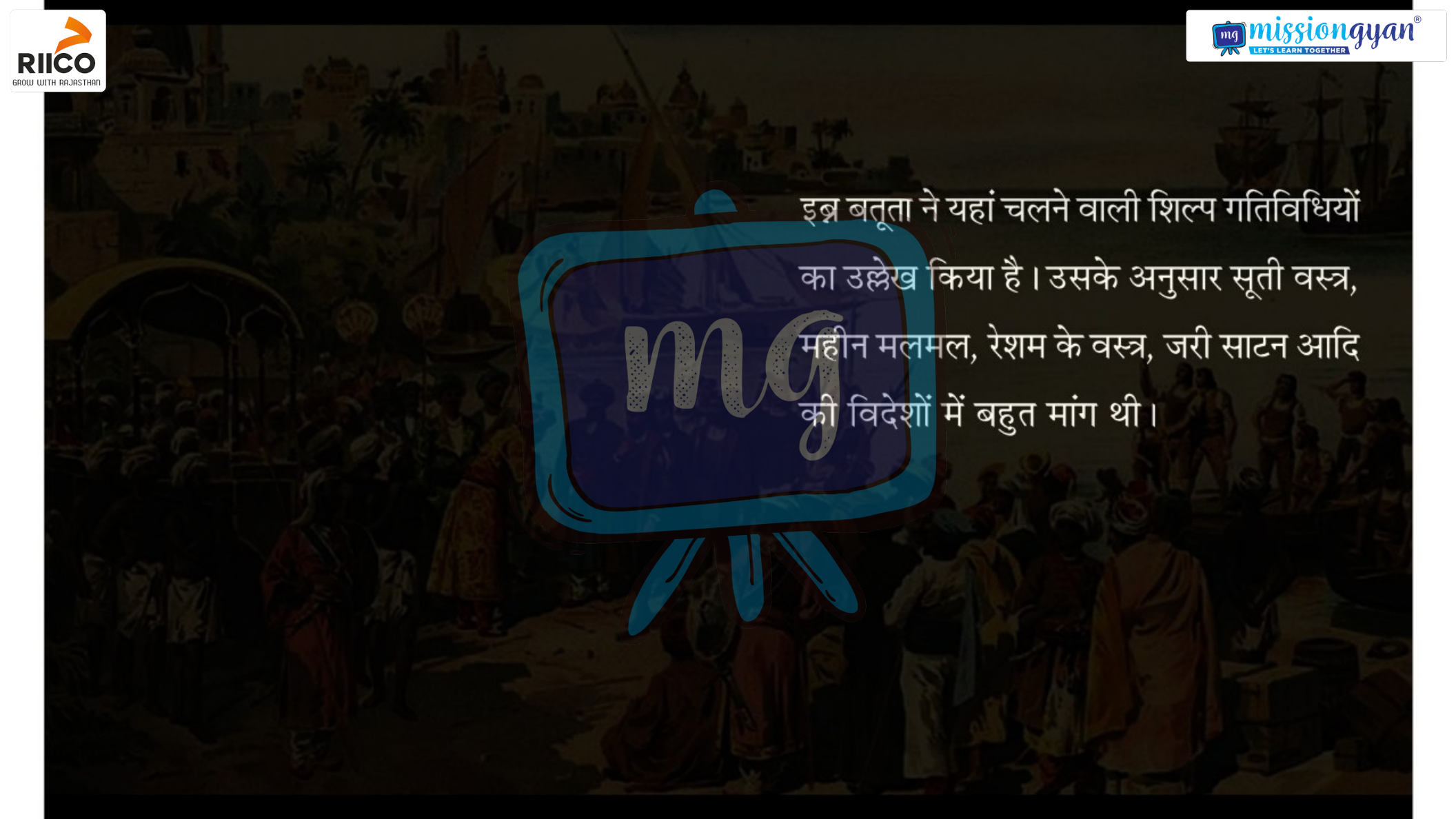

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इब्न बतूता ने यहां चलने वाली शिल्प गतिविधियों का उल्लेख किया है। उसके अनुसार सूती वस्त्र, महीन मलमल, रेशम के वस्त्र, जरी साटन आदि की विदेशों में बहुत मांग थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

10. विश्व के सीमारेखा मानचित्र पर उन देशों को चिन्हित कीजिए जिनकी यात्रा इब्न बतूता ने की थी। कौन-कौन से समुद्रों को उसने पार किया होगा।

उत्तर : इब्न बतूता ने जिन देशों की यात्रा की :-

(मोरक्को उत्तरी अफ्रीका - मूल देश)

- मोरक्को
- सीरिया
- सुल्तान
- सिन्ध
- चीन
- सुमात्रार (इंडोनेशिया)
- पूर्वी अफ्रीका
- इराक
- कन्धार
- भारत
- श्रीलंका

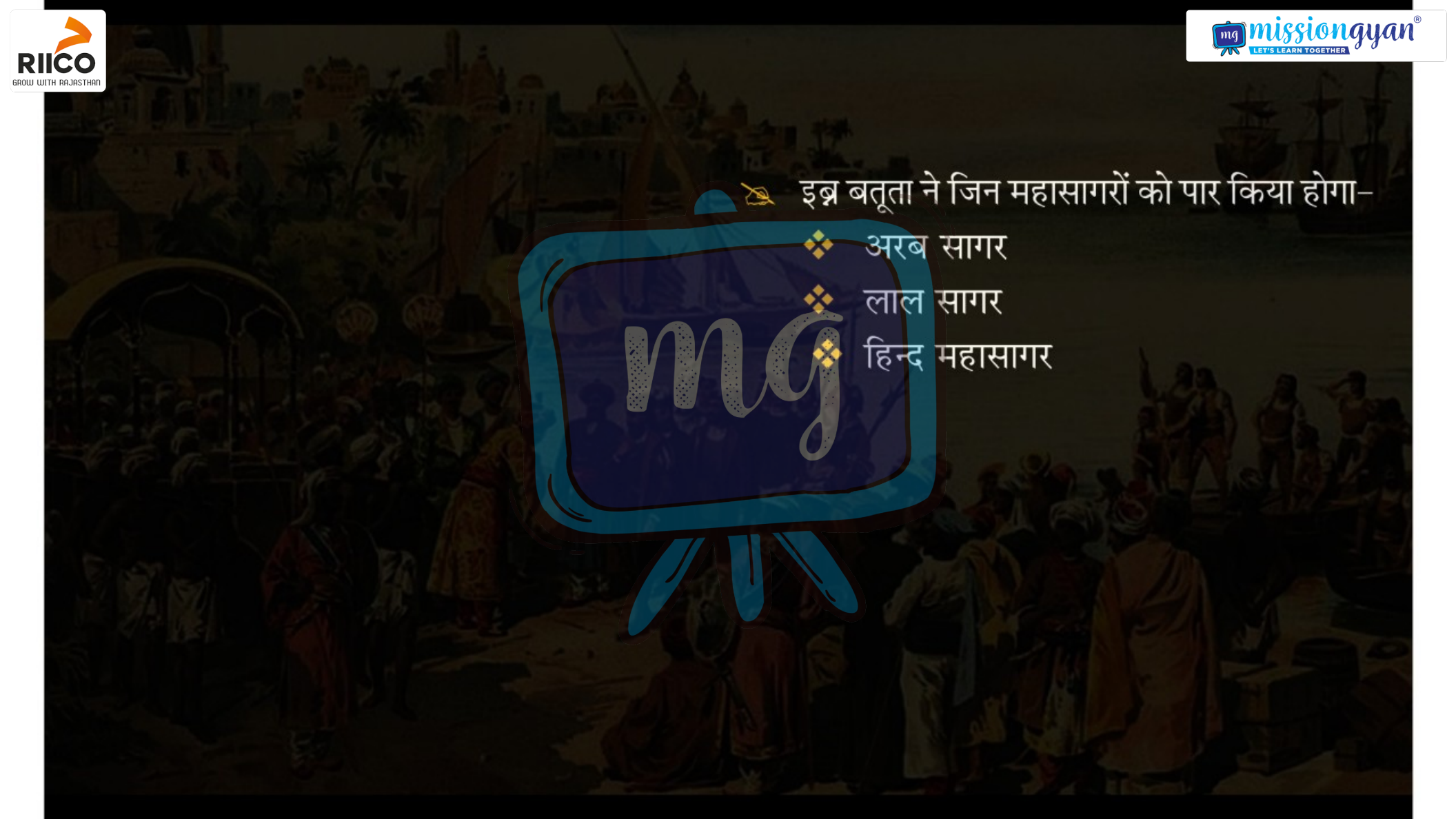

इब्न बतूता ने जिन महासागरों को पार किया होगा–

- अरब सागर
- लाल सागर
- हिन्द महासागर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER